ISSN–2277- 8721

EIIRJ Electronic International Interdisciplinary Research Journal

Volume–XII, Issues – V Sept – Oct 2023

OPEN ACCESS Original Research Article

# स्नातक स्तर पर दिव्यांग एवं सामान्य विद्यार्थियों के अधिगम शैली, एवं समायोजन का तुलनात्मक

**डॉ. मृत्युंजय मिश्रा**

*असिस्टेंट प्रोफेसर*

**दुष्यन्त तिवारी**

*शोधार्थी, शिक्षाशास्त्र*

*स्कूल ऑफ एजुकेशन, संस्कृति विश्वविद्यालय, मथुरा।*

**सारांश:**

*प्रस्तुत समस्या कथन ''स्नातक स्तर पर दिव्यांग एवं सामान्य विद्यार्थियों के अधिगम शैली एवं समायोजन का तुलनात्मक अध्ययन'' किया गया है। प्रस्तुत शोध कार्य की प्रकृति को ध्यान में रखतें हुए वर्णनात्मक अनुसंधान का एक प्रकार ''सर्वेक्षण विधि'' का प्रयोग किया गया है। प्रस्तुत अध्ययन में विश्वविद्यालय एवं उनसे सम्बद्ध महाविद्यालयों में अध्ययनरत् दिव्यांग एवं सामान्य वर्ग के विद्यार्थियों को जनसंख्या माना है। प्रस्तुत शोध में विश्वविद्यालय एवं उनसे सम्बद्ध महाविद्यालयों में अध्ययनरत् 30 दिव्यांग विद्यार्थी का चयन गुच्छ न्यादर्शन विधि से एवं 30 सामान्य विद्यार्थी का चयनयादृच्छिक विधि से किया है। अधिगम शैली का मापन करने हेतु मानकीकृत उपकरण उपलब्ध होने पर शोधकर्त्ता द्वारा करूणा शंकर मिश्र द्वारा निर्मित ''लर्निंग स्टाइल इन्वेन्ट्री' का प्रयोग किया गया है। सामान्य एवं विकलांग विद्यार्थियों के समायोजन क्षमता से सम्बन्धित आँकड़े एकत्रित करने हेतु डॉ0 ए0के0पी0 सिंह और डा. आर.पी. सिंह के समायोजन सूची का प्रयोग किया गया है। शोध में आँकड़ों के विश्लेषण एवं उनकी व्याख्या हेतु मध्यमान, मानक विचलन, मानक त्रुटि एवं टी-अनुपात सांख्यिकी विधि का प्रयोग किया गया। अध्ययन में निम्नलिखित निष्कर्ष प्राप्त हुये- स्नातक स्तर के दिव्यांग एवं सामान्य विद्यार्थियों के अधिगम शैली में कोई सार्थक अन्तर नहीं है अर्थात् दोनों की एक समान अधिगम शैली है। स्नातक स्तर के दिव्यांग एवं सामान्य छात्रों के अधिगम शैली में कोई सार्थक अन्तर नहीं है अर्थात् दोनों की एक समान अधिगम शैली है। स्नातक स्तर के दिव्यांग एवं सामान्य छात्राओं के अधिगम शैली में कोई सार्थक अन्तर नहीं है अर्थात् दोनों की एक समान अधिगम शैली है। स्नातक स्तर के दिव्यांग एवं सामान्य विद्यार्थियों के समायोजन में सार्थक अन्तर है अर्थात् सामान्य विद्यार्थियों की समायोजन क्षमता दिव्यांग विद्यार्थियों की अपेक्षा उच्च है। स्नातक स्तर के दिव्यांग एवं सामान्य छात्रों के समायोजन में सार्थक अन्तर है अर्थात् सामान्य विद्यार्थियों में समायोजन क्षमता दिव्यांग विद्यार्थियों की अपेक्षा उच्च है। स्नातक स्तर के दिव्यांग एवं सामान्य छात्राओं के समायोजन में सार्थक अन्तर है अर्थात् सामान्य छात्राओं की समायोजन क्षमता*

ISSN–2277- 8721

EIIRJ Electronic International Interdisciplinary Research Journal

Volume–XII, Issues – V Sept – Oct 2023

OPEN ACCESS Original Research Article

*दिव्यांग छात्राओं की अपेक्षा उच्च है।*

**मुख्य शब्द-** *स्नातक स्तर, छात्र-छात्राएँ, अधिगम शैली, समायोजन क्षमता, तुलना*

**Copyright © 2023 The Author(s):** This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY-NC 4.0) which permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any medium for non-commercial use provided the original author and source are credited.

**प्रस्तावना:**

शिक्षा मानव विकास का मूल साधन है। इसके द्वारा व्यक्ति की जन्म जात शक्तियों का विकास उसके ज्ञान एवं कला कौशल में वृद्धि एवं व्यवहार में परितर्वन किया जाता है और उसे सभ्य, सुसंस्कृत एवं योग्य नागरिक बनाया जाता है। बालक जब इस संसार में आता है तो वह एक अबोध एवं असहाय प्राणी मात्र होता है। वह बोलना, चलना, हँसना, खेलना इत्यादि क्रियायें अपने माता-पिता तथा परिवार में सीखता है। वह बालक परिवार से विद्यालय में प्रवेश करता है तो वहाँ पर उसे नवीन परिस्थितियों का सामना करना पड़ता है। इस परिस्थितियों से समायोजन स्थापित करने हेतु वह अनुकरण का सहारा लेता है। विद्यालय में वह पढ़ता लिखता है, सामाजिक आचरण, अच्छी आदतें आदि को सीखता है। सीखने की यह प्रक्रिया आजीवन चलती रहती है, और इस सीखनें की प्रक्रिया द्वारा वह अपने व्यवहार में परिमार्जन एवं परिवर्तन करता जाता है। किसी समाज में सदैव चलने वाली सीखने-सिखाने की यह सोद्देश्यपूर्ण प्रक्रिया ही शिक्षा कहलाती है।

अखिल भारतीय जिला अधिकारी सम्मेलन में श्रीमती इन्दिरा गांधी ने कहा, ‘मैं बच्चों को समाज का उत्पादन सदस्य बनाने में विश्वास करती हूँ। बच्चे चाहे कोई भी हों।’’

इस दृष्टि से दिव्यांगों के लिए तो यह विचार और भी अधिक महत्व रखता है। शिक्षा का उद्देश्य बालक को उसकी क्षमता के अनुरूप अधिक समाजोपयोगी बनाना है। यदि दिव्यांग वर्ग को शिक्षा के इस कार्य से वंचित रखा जाता है तो प्रजातंत्र के लिए यह घोर दुःखद स्थिति है। प्रजातांत्रिक देशांे में शिक्षा किसी व्यक्ति का विशेषाधिकार नही है, अपितुु सभी व्यक्ति का जन्मसिद्ध अधिकार है। अतः दायित्व इस बात से उभरता है कि सामान्य बालकों की भांति ही प्रत्येक दिव्यांग को उनकी क्षमता एवं आकांक्षा के अनुरूप शिक्षा प्रदान की जाए, जिससे उनमें आत्मग्लानि, नैराश्य, हीनभावना और अकर्मण्यता के स्थान पर आत्मविश्वास, आशा और कर्मठता के साथ-साथ अपनी दिव्यांग स्थिति में भी जीवन जीने के प्रति एक आकर्षण उत्पन्न हो एवं दिव्यांग के दृष्टिकोण में स्वावलम्बन का आकार स्पष्ट हो।

वर्ष 2011 की जनगणना के अनुसार भारत की जनसंख्या 1 अरब 21 करोड़ हो गयी है। जिसमें 3.12 करोड़ दिव्यांग है। शैक्षिक दृष्टिकोण के अनुसार, एक बालक शारीरिक रूप से दिव्यांग तब होता है, जब उसकी शारीरिक स्थिति विभिन्न बचपन की क्रियाओं, जैसे सामाजिक, मनोरंजनात्मक, शैक्षिक तथा व्यावसायिक क्रियाओं में भाग लेने में बाधा उत्पन्न करती है।

भारतीय संविधान के भाग-4 में ‘राज्य के नीति निर्देशक तत्व’ के अन्तर्गत अनुच्छेद-45 में बच्चों के लिए प्राथमिक शिक्षा की व्यवस्था का प्रावधान है। संविधान के 86वंे संशोधन विधेयक

ISSN–2277- 8721

EIIRJ Electronic International Interdisciplinary Research Journal

Volume–XII, Issues – V Sept – Oct 2023

OPEN ACCESS Original Research Article

(2002) द्वारा अनुच्छेद-21(ए) के अन्तर्गत 6-14 वर्ष आयु वर्ग के बच्चों के लिए निःशुल्क एवं अनिवार्य शिक्षा प्राप्त करने का मौलिक अधिकार प्रदान किया गया है। इसके अतिरिक्त 46वें अनुच्छेद में कमजोर वर्गों के लिए विशेष रूप से शिक्षा की व्यवस्था करने का प्रावधान है। इसके अनुपालन के लिए भारत सरकार ने सन् 2003 से 'सर्व शिक्षा अभियान' प्रारम्भ किया है। इस कार्यक्रम में गोवा को छोड़कर समग्र देश सम्मिलित है। वहीं शिक्षा का अधिकार अधिनियम, 2009 में समावेशी शिक्षा को महत्व दिया गया एवं दिव्यांग बच्चों को सामान्य बच्चों के साथ शिक्षा में बराबरी का हक प्रदान किया गया।

अधिगम शैली को वैयक्तिक भिन्नता की क्रियाशीलता के रूप में माना गया है। जिसका प्रयोग शिक्षक छात्र के अधिगम को बढ़ाने में करता है। इस प्रकार अधिगम शैली अधिगम पाठ्यक्रम में व्यक्ति के शारीरिक, सामाजिक, भावात्मक तथा वातावरणीय तत्व के प्रति व्यक्ति के पूर्ण दर्शन का योग है। अतः अधिगम शैली की पहचान पर शिक्षण करने से छात्रों के अधिगम को प्रभावशाली बनाया जा सकता है। अतः यह कहा जा सकता है कि अधिगम शैलियाँ छात्र के अधिगम को बहुत ही प्रभावित करती है, इसलिए इन अधिगम शैलियों का ज्ञान अत्यन्त आवश्यक है। कुछ शोध से यह इंगित होता है कि विज्ञान वर्ग के विद्यार्थियों में अधिगम शैली कला वर्ग के विद्यार्थियों की अपेक्षा उच्च पाया जाता है (अहमद, मो. वसील 2015)।

किशोरों में व्यक्तित्व व समायोजन सम्बंधी समस्याओं व आवश्यकताओं को भी शिक्षाविद् स्वीकार करते है। समायोजन से तात्पर्य है- ''वास्तविकता के धरातल पर परिस्थितियों अपने अनुसार ढालने की प्रक्रिया।'' जहाँ एक तरफ दिव्यांग बच्चों एवं सामान्य बच्चों के मानसिक स्वास्थ्य पर प्रभाव देखने में आता है वहीं इनके समायोजन में भी समस्याएँ उत्पन्न होना स्वाभाविक है तथा उनके शैक्षिक उपलब्धि को प्रभावित करना स्वाभाविक प्रतीत होता है। कुछ शोध द्वारा इंगित होता है कि दिव्यांग एवं सामान्य बच्चों के समायोजन एवं शैक्षिक उपलब्धि पर वातावरणीय एवं व्यक्तिगत कारक अपना प्रभाव डालते है जहाँ इनकी शिक्षा अवरूद्ध होने की संभावना ज्यादा हो जाती है। सिंह (2000) ने परिणाम के रूप में पाया कि समायोजन के सभी प्रमुख क्षेत्रों परिवार, विद्यालय, समाज एवं संवेग में आत्म विश्वास की समर्थ भूमिका परिलक्षित हुई। राजू एवं रहमतुल्ला (2007) ने विद्यालयी विद्यार्थियों के समायोजन में मुख्यतः शिक्षा का माध्यम तथा विद्यालयी प्रबन्धकीय मुख्य कारक पाये गये। युनुस एवं बाबा (2014) ने विद्यालयी वातावरण एवं पारिवारिक वातावरण का विद्यार्थियों के खराब शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव पाया। कुमार, महेन्द्र (2017) ने निष्कर्ष में पाया कि - 80 प्रतिशत सामान्य छात्र कक्षा-कक्ष में समायोजन करने में कठिनाई उत्पन्न करते है जबकि 60 प्रतिशत दिव्यांग छात्र कक्षा-कक्ष में समायोजन करने में कठिनाई उत्पन्न करते है। अतः अध्ययकर्त्ता अपने शोध द्वारा यह जानने का प्रयास करेगा कि क्या सरकार द्वारा दिव्यांग एवं सामान्य विद्यार्थियों के लिए किये गये प्रयासों के बाद भी दिव्यांग एवं सामान्य विद्यार्थियों के अधिगम शैली एवं समायोजन में अन्तर है या नहीं?

**समस्या कथन:**

''स्नातक स्तर पर दिव्यांग एवं सामान्य विद्यार्थियों के अधिगम शैली, एवं समायोजन का तुलनात्मक अध्ययन।''

**शोध का उद्देश्य:**

अध्ययन में निम्नलिखित उद्देश्यों का अध्ययन किया है-

ISSN–2277- 8721

EIIRJ Electronic International Interdisciplinary Research Journal

Volume–XII, Issues – V Sept – Oct 2023

OPEN ACCESS Original Research Article

1. स्नातक स्तर के दिव्यांग एवं सामान्य विद्यार्थियों के अधिगम शैली का तुलनात्मक अध्ययन।
2. स्नातक स्तर के दिव्यांग एवं सामान्य छात्रों के अधिगम शैली का तुलनात्मक अध्ययन।
3. स्नातक स्तर के दिव्यांग एवं सामान्य छात्राओं अधिगम शैली का तुलनात्मक अध्ययन।
4. स्नातक स्तर के दिव्यांग एवं सामान्य विद्यार्थियों के समायोजन का तुलनात्मक अध्ययन।
5. स्नातक स्तर के दिव्यांग एवं सामान्य छात्रों के समायोजन का तुलनात्मक अध्ययन।
6. स्नातक स्तर के दिव्यांग एवं सामान्य छात्राओं समायोजन का तुलनात्मक अध्ययन।

**शोध की परिकल्पनाएँ:**

अध्ययन में निम्नलिखित उद्देश्यों के आधार पर निम्नलिखित शून्य परिकल्पनाओं का परीक्षण किया है-

1. स्नातक स्तर के दिव्यांग एवं सामान्य विद्यार्थियों के अधिगम शैली में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
2. स्नातक स्तर के दिव्यांग एवं सामान्य छात्रों के अधिगम शैली में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
3. स्नातक स्तर के दिव्यांग एवं सामान्य छात्राओं अधिगम शैली में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
4. स्नातक स्तर के दिव्यांग एवं सामान्य विद्यार्थियों के समायोजन में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
5. स्नातक स्तर के दिव्यांग एवं सामान्य छात्रों के समायोजन में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
6. स्नातक स्तर के दिव्यांग एवं सामान्य छात्राओं समायोजन में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

**शोध प्रविधि:**

प्रस्तुत अध्ययन कार्य की प्रकृति को ध्यान में रखतें हुए वर्णनात्मक अनुसंधान का एक प्रकार ''सर्वेक्षण विधि'' का प्रयोग किया गया है।

**जनसंख्या:**

प्रस्तुत अध्ययन में विश्वविद्यालय एवं उनसे सम्बद्ध महाविद्यालयों में अध्ययनरत् दिव्यांग एवं सामान्य वर्ग के विद्यार्थियों को जनसंख्या माना है।

**न्यादर्श:**

प्रस्तुत शोध में विश्वविद्यालय एवं उनसे सम्बद्ध महाविद्यालयों में अध्ययनरत् 30 दिव्यांग विद्यार्थी का चयन गुच्छ न्यादर्शन विधि से एवं 30 सामान्य विद्यार्थी का चयन यादृच्छिक विधि से किया है।

**निष्कर्ष:**

अध्ययन में निम्नलिखित निष्कर्ष प्राप्त हुये-

1. स्नातक स्तर के दिव्यांग एवं सामान्य विद्यार्थियों के अधिगम शैली में कोई सार्थक अन्तर नहीं है अर्थात् दोनों की एक समान अधिगम शैली है।
2. स्नातक स्तर के दिव्यांग एवं सामान्य छात्रों के अधिगम शैली में कोई सार्थक अन्तर नहीं है अर्थात् दोनों की एक समान अधिगम शैली है।
3. स्नातक स्तर के दिव्यांग एवं सामान्य छात्राओं के अधिगम शैली में कोई सार्थक अन्तर नहीं है अर्थात् दोनों की एक समान अधिगम शैली है।
4. स्नातक स्तर के दिव्यांग एवं सामान्य विद्यार्थियों के समायोजन में सार्थक अन्तर है अर्थात् सामान्य विद्यार्थियों

ISSN–2277- 8721

EIIRJ Electronic International Interdisciplinary Research Journal

Volume–XII, Issues – V Sept – Oct 2023

OPEN ACCESS Original Research Article

की समायोजन क्षमता दिव्यांग विद्यार्थियों की अपेक्षा उच्च है।

5. स्नातक स्तर के दिव्यांग एवं सामान्य छात्रों के समायोजन में सार्थक अन्तर है अर्थात् सामान्य विद्यार्थियों में समायोजन क्षमता दिव्यांग विद्यार्थियों की अपेक्षा उच्च है।
6. स्नातक स्तर के दिव्यांग एवं सामान्य छात्राओं के समायोजन में सार्थक अन्तर है अर्थात् सामान्य छात्राओं की समायोजन क्षमता दिव्यांग छात्राओं की अपेक्षा उच्च है।

**सन्दर्भ ग्रन्थ सूची:**


1. अहमद, मो. वसील *(2015)*. माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की अधिगम शैली एवं कम्प्यूटर शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन, एम.एड. लघु शोध प्रबन्ध, नेहरू ग्राम भारती विश्वविद्यालय, इलाहाबाद।
2. एगुनसोना, ए.ओ.ई. *(2014)*. इन्फ्लुऐन्स होम इन्वायर्मेन्ट ऑफ ऐकेडमिक एचिवमेन्ट परफार्मेन्स ऑफ सेकेण्डरी स्कूल स्टूडेन्ट्स इन एग्रीकल्चर साइंस इन अदमवा स्टेट नाइजीरिया, आई.ओ.एस.आर. जर्नल ऑफ रिसर्च एण्ड मेथेड इन एजुकेशन, वाल्यूम-*14*, इश्शू-*4*, वर्जन-प्प्, पृ*0 46-53*, ़ृ़़ृ़ृण्पवेतरवनतदंसेण्वतह
3. कुमार, महेन्द्र *(2017)*. माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् सामान्य एवं दिव्यांग विद्यार्थियों के शैक्षिक समायोजन का तुलनात्मक अध्ययन लघु शोध प्रबन्ध (शिक्षा-संकाय), जगद्गुरु रामभद्राचार्य दिव्यांग विश्वविद्यालय, चित्रकूट (उ.प्र.)
4. कमुती, मुसीली, जेरोमे *(2015)*. इन्फ्लुऐन्स ऑफ होम इन्वायर्मेन्ट ऑन ऐकेडमी परफार्मेन्स ऑफ स्टूडेन्ट्स इन पब्लिक सेकेण्डरी स्कूल्स इन केटुई वेस्ट सब कन्ट्री केटुई कन्ट्री केन्या, साउथ इर्स्टन केन्या यूनिवर्सिटी
5. गुप्ता, एस.पी. *(2009)*. उच्चतर शिक्षा मनोविज्ञान, इलाहाबादः शारदा पुस्तक भवन।
6. चौहान, एस.एस. *(1978)*. उच्च शिक्षा मनोविज्ञान, नई दिल्लीः विकास पब्लिशिंग हाउस।
7. जायसवाल, स्वाती *(2020)*. यू.पी. बोर्ड एवं सी.बी.एस.ई. बोर्ड के माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि का समायोजन तथा शैक्षिक दुश्चिंता से सह-सम्बन्ध का अध्ययन, शोध प्रबन्ध (शिक्षाशास्त्र), नेहरू ग्राम भारती (मानित विश्वविद्यालय), प्रयागराज।
8. तिवारी, प्रतिमा *(2015)*. माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर अधिगम शैली के प्रभाव का अध्ययन, एम.एड. लघु शोध प्रबन्ध, इलाहाबाद विश्वविद्यालय, इलाहाबाद।
9. पाण्डेय, रामसकल *(1983)*. शिक्षादर्शन, आगराः विनोद पुस्तक मन्दिर।
10. पारसनाथ राय *(2006)*. अनुसंधान परिचय आगरा, लक्ष्मी नारायण अग्रवाल।
11. फर्हम एवं अन्य *(2014)*. ग्रामीण व शहरी कॉलेज विद्यार्थियों में मानसिक स्वास्थ्य, स्व-सम्मान तथा आत्मनिष्ठ कल्याण का विश्लेषणात्मक अध्ययन, जी.सी.ई. जर्नल ऑफ रिसर्च एण्ड एक्सटेंशन इन एजुकेशन, *9(2)*, पृ*0 66-75*

ISSN–2277- 8721

EIIRJ Electronic International Interdisciplinary Research Journal

Volume–XII, Issues – V Sept – Oct 2023

OPEN ACCESS Original Research Article

12. भार्गव, हर प्रसाद *(1998)*. विशिष्ट बालक, आगराः कचहरी घाट।
13. मणिमाला *(2020)*. सामान्य एवं विकलांग विद्यार्थियों के सामाजिक-आर्थिक स्तर का उनके सृजनात्मकता एवं समायोजन पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन, शोध प्रबन्ध (शिक्षाशास्त्र), नेहरू ग्राम भारती (मानित विश्वविद्यालय), प्रयागराज।
14. मालवीय, राघवेन्द्र *(2021)*. परास्नातक स्तर के विद्यार्थियों की समायोजन क्षमता एवं मानसिक स्वास्थ्य का उनके शैक्षिक उपलब्धि पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन, शोध प्रबन्ध (शिक्षाशास्त्र), नेहरू ग्राम भारती (मानित विश्वविद्यालय), प्रयागराज।
15. माथुर, एस.एस. *(2009)*. शिक्षा मनोविज्ञान, आगराः अग्रवाल पब्लिकेशन्स।
16. मुनिराजम्मा एवं अन्य *(2011)*. एकांकी परिवार में माता-पिता की वैवाहिक सन्तुष्टि व बच्चों का मानसिक स्वास्थ्य, जर्नल ऑफ कम्यूनिटी गाइडेन्स एण्ड रिसर्च, *28(3)*
17. मंसूरी, इम्तियाज *(2015)*. मध्यप्रदेश के हाईस्कूल स्तर के दृष्टिबाधित एवं श्रवणबाधित विद्यार्थियों के शैक्षिक रुचि, बुद्धि व समायोजन का तुलनात्मक अध्ययन, शोध प्रबन्ध (शिक्षाशास्त्र), जीवाजी विश्वविद्यालय, ग्वालियर (म.प्र.*),*
18. राजू एवं रहमतुल्ला *(2007)*. ऐडजेस्टमेन्ट प्रॉब्लम्स एमंग स्कूल स्टूडेन्ट्स, जर्नल ऑफ द इण्डियन ऐकेडमी ऑफ एप्लाइड साइकोलॉजी, *33 (1)*, पृ*0 73-79*
19. लाल, रमन बिहारी *(2002-03)*. शिक्षा सिद्धान्त, मेरठः रस्तोगी पब्लिकेशन।
20. श्रीवास्तव, डी*0*एस*0 (1996)*. अनुसंधान विधियां, आगरा: साहित्य प्रकाशन।
21. संजय *(2018)*. इलाहाबाद जनपद के सामान्य तथा श्रवण बाधित छात्रों के समायोजन का तुलनात्मक अध्ययन, लघु शोध प्रबन्ध, नेहरू ग्राम भारती विश्वविद्यालय, प्रयागराज।
22. सिंह, दिनेश *(2019)*. स्नातक स्तर के छात्र-छात्राओं की चिन्ता, समायोजन क्षमता एवं मानसिक स्वास्थ्य का शैक्षिक उपलब्धि पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन, शोध प्रबन्ध (शिक्षाशास्त्र), नेहरू ग्राम भारती (मानित विश्वविद्यालय), प्रयागराज।
23. सिहं ए. के. *(2007)*. मनोविज्ञान, समाजशास्त्र तथा शिक्षा में शोध विधियाँ, पटना, मोतीलाल, बनारसीदास।

***Cite This Article:***

*** डॉ. मिश्रा म. & तिवारी द.,** *(2023)*. स्नातक स्तर पर दिव्यांग एवं सामान्य विद्यार्थियों के अधिगम शैली, एवं समायोजन का तुलनात्मक, ***Electronic International Interdisciplinary Research Journal***, *XII, Issues – V, Sept-Oct, 2023, 58-63.*